B.Ed-1

12/05/20

Sub- Philosophical & Sociological perspectives of Education

(जॉन डीवी - [1859 - 1952]

* ये प्रयोजनवादी एवं अनुभववादी दोनों माने जाते है।
* ये विचार और विश्वास की व्यवहारिकता को सत्य मानते है।
* इनके अनुसार मानव को अपनी बुद्धि तथा रचनात्मक शक्ति की सहायता से अपने जीवन के मूल्यों की रचना करनी होती है और ये सत्य तथा मूल्य, समय तथा स्थान के अनुसार भिन्न² होते है।
* ये ज्ञान का स्त्रोत अनुभव को मानते है तथा अनुभव द्वारा हमें सच्चा ज्ञान मिलता है और हमारे आचरण में परिवर्तन होता है।
* ये मनुष्य को सामाजिक प्राणी मानते है समाज के बाद इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।
* परिवर्तन ही मूल सत्य है।
* इनके प्रयोजनवाद को दो रूप - नैमित्तिकवाद तथा प्रयोगवाद में विभाजित किया गया है।
* इनकी शिक्षा का स्वरूप प्रसिद्ध पुस्तक 'प्रोग्रेसिव एजुकेशन' तथा 'न्यू एजुकेशन' में मिलता है।
* बालको की शिक्षा हेतु इन्होंने प्रोग्रेसिव स्कूल की स्थापना की।
* ये शिक्षा को त्रिपक्षीय प्रक्रिया मानते है जिसमे अध्यापक, शिक्षार्थी तथा पाठ्यक्रम को महत्व दिया।
* शिक्षा अनुभवों के पुनर्निर्माण तथा एक सामाजिक प्रक्रिया है।
* यह शिक्षा के पाठ्यक्रम को बालको की वास्तविक जीवन की क्रियाओं तथा समाज की आवश्यकताओं पर आधारित करने के पक्ष में थे तथा पाठ्यक्रम में समय की आवश्यकतानुसार परिवर्तन का गुण होना चाहिए।
* शिक्षा हेतु 'योजना पद्धति' की नींव रखी।
* ये विद्यालय को समाज का लघु रूप मानते थे जिसमे प्रजातांत्रिक गुणों का विकास संभव है।

Scanned with CamScanner